

वश्व आर्थिक मंच ने जारी की 'द फ्यूचर ऑफ जॉब्स 2018' रपिर्ट

चर्चा में क्यों

तकनीकी में उन्नयन और नवाचार के साथ ही मानव कौशल से जुड़े कामों में मशीनों की हस्सेदारी बढ़ती जा रही है। हाल ही में वश्व आर्थिक मंच (WEF) द्वारा जारी की गई रपिर्ट 'द फ्यूचर ऑफ जॉब्स 2018' में यह दावा किया गया है कि 2025 तक आधे से अधिक नौकरियों पर मशीनों का कब्ज़ा होगा। स्वचालित रोबोटों के इस्तेमाल से काम का स्वरुप तथा मानव श्रम का तरीका भी बदल जाएगा। वश्व आर्थिक मंच (WEF) ने कामों के मशीनीकरण की रफ्तार तथा उसमें आने वाले बदलाव का वशिलेक्षण करते हुए यह अनुमान लगाया है।

महत्त्वपूर्ण बडि

- 'द फ्यूचर ऑफ जॉब्स 2018' रपिर्ट में उद्योग क्षेत्रों की वसितृत शरूंखला से 300 से अधिक वैश्विक कंपनियों को शामिल किया गया है।
- इस सर्वे में 1.5 करोड़ से अधिक कर्मचारी और 20 वकिसति तथा उभरती अर्थव्यवस्थाएँ शामिल थीं जो वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 70 प्रतिशत धारण करती हैं।
- वर्तमान में कुल कार्य का 71 फ्रीसदी हस्सिा मानव श्रम द्वारा होता है।
- 2022 तक आते-आते यह हस्सिा 58 तक रह जाएगा, वहीं 2025 तक यह हस्सेदारी 48 पर समित जाएगी।
- वश्व आर्थिक मंच ने अपनी रपिर्ट 'द फ्यूचर ऑफ जॉब्स 2018' में यह दावा किया है।
- नौकरियों में व्यापक स्तर पर छटनी कयि जाने के बावजूद कंप्यूटर प्रोग्राम वाली मशीनें, रोबोट मानव रोजगार पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं।
- चूंकि इसी रपिर्ट में यह भी दावा किया गया है कि रोबोट क्रांति यानी ऑटोमेशन की इस प्रकरया के दौरान अगले पाँच सालों में 5 करोड़ 80 लाख नई नौकरियों का सृजन होगा।

चुनौतियाँ क्या हैं?

- एक तरफ रोजगार के अवसरों में सकारात्मक वृद्धि होने का अनुमान है तो वहीं दूसरी तरफ, इससे मानव श्रम की नई भूमिकाओं की गुणवत्ता, स्थान, स्वरुप और सथायतिव में महत्त्वपूर्ण बदलाव आएंगे।
- कंप्यूटर प्रोग्राम वाली मशीनों, रोबोटों की गति के साथ तालमेल बढाते हुए मानव श्रम के कौशल को नखिरना होगा।
- यह वाकई आलोचनात्मक है कि ज़्यादातर उद्योग अपने मौजूदा मानव संसाधन के कौशल को वकिसति करने में सक्रयि भूमिका नहीं नभिते हैं।
- ऐसे उद्योग जो गतिशील, औरों से अलग तथा प्रतिस्पर्धी बने रहना चाहते हैं उन्हें अपने मानव संसाधनों में भी नविश करना ही होगा।
- मशीनी औद्योगिक क्रांति के इस चरण में मानव संसाधन में नविश करना आर्थिक तथा नैतिक आधारों पर अनविर्य है।

आगे की राह

सबसे पहले हमें रोबोट क्रांति के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही प्रभावों के संबंध में एक समग्र अध्ययन करना होगा। लेकिन एक ही दशक में मध्य देश का एक बड़ा तबका नौकरियों से हाथ धो बैठेगा। अतः ऑटोमेशन को लेकर सरकार को सतर्क रहना होगा। मशीनीकरण के माध्यम से आए बदलावों से सर्वाधिक प्रभावति वे समूह होते हैं जो अपने कौशल क्षमता में नशिचति समय के भीतर आवश्यक सुधार लाने में असमर्थ होते हैं। अतः सरकार तथा उद्योगों को चाहयि कि ऐसे लोगों को प्रशकषण के लयि पर्याप्त समय के साथ-साथ संसाधन भी उपलब्ध कराए। तकनीकों के इस बदलते दौर में ज़रूरत इस बात की है कि वशिषजतापूर्ण कार्यों के लयि लोगों को कौशल प्रशकषण दिया जाए और इसके लयि अवसंरचना का भी वकिसा कयि जाए।